रम्भा शुक संवाद

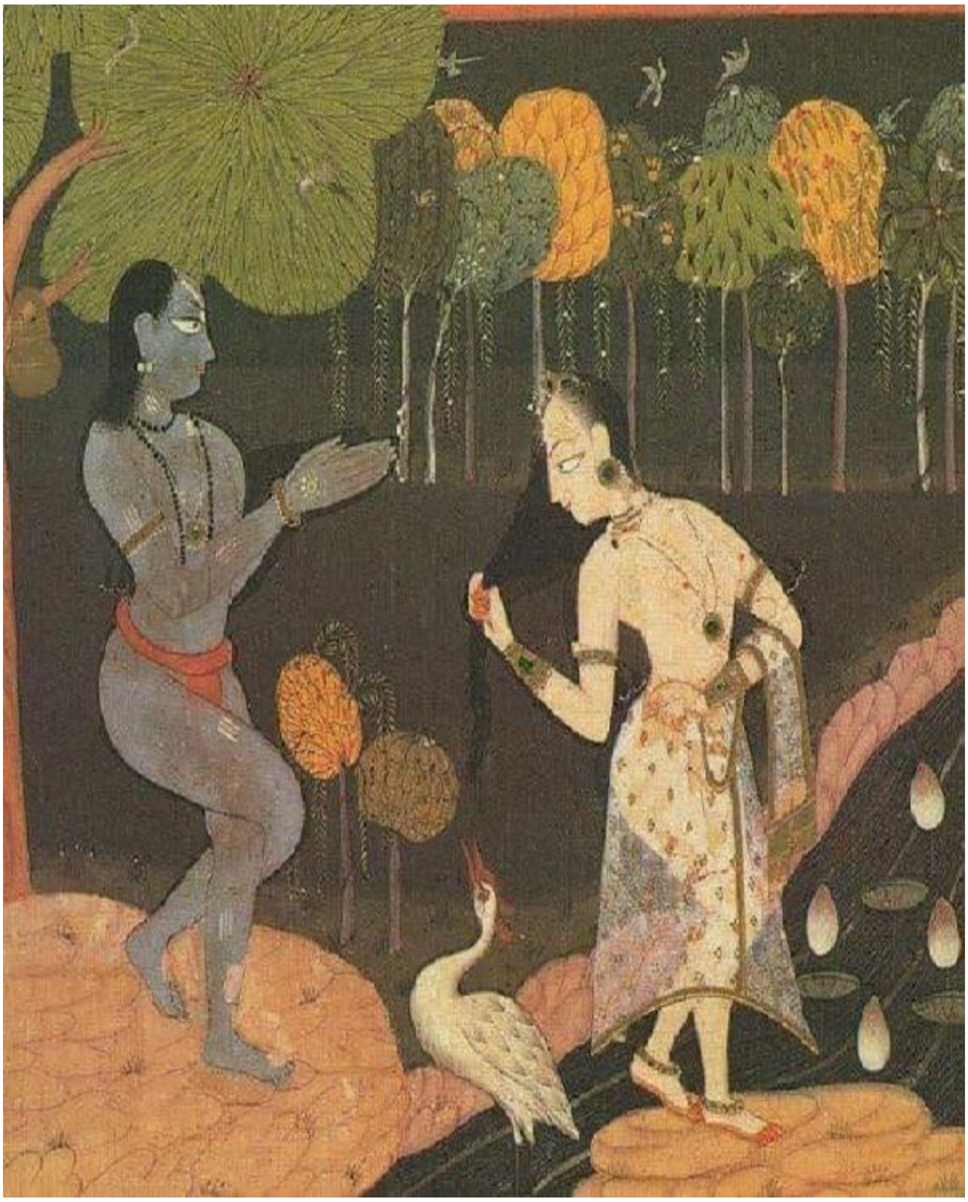

कलेवर प्रस्तुति

डा० सुरेन्द्र वर्मा

रम्भा शुक संवाद

रचना की पृष्ठभूमि: अप्सरा रंभा श्री शुकदेव जी के रूप लावण्य को देख मुग्ध हो उनसे प्रणय निवेदन करती है। श्री शुकदेव जी तो जन्म से ही सहज विरागी और जन्म पूर्व ही वरदान प्राप्त थे कि उन पर माया का प्रभाव नहीं पड़ेगा। रंभा रूप सुंदरी है तो मुनि शिरोमणि शुकदेव जी परमहंस! रम्भा श्रृंगार और यौवन का वर्णन करते नहीं थकती, तो शुकदेव जी ईश्वरानुसंधान का। रंभा उनको लुभाने में सतत प्रयत्नशील पर शुकदेव जी निर्लिप्त। अंतत: शुकदेव ने पूछा, 'देवी आप क्यों मुझे विचलित करना चाह रही हो? रंभा ने कहा, ताकि हम परस्पर भोग कर सकें। शुकदेवजी बोले 'देवी, मैं तो उस परम अजस्र रस से छका हुआ हूं जिसे छोड़कर जीवन को निरर्थक बनाना नहीं चाहता। कुछ और रस हो भी, तो मुझे क्या?

दोनों के बीच का ये संवाद अति सुंदर है। इस प्रसंग को श्रृंगार और अध्यात्म का, अथवा भोगवादी और मुमुक्षु का संवाद कह सकते हैं। हमें बड़ी सावधानी से अपनी दृष्टि मायिक संसार से हटा कर शाश्वत सत्य 'ब्रह्म निष्ठा' पर केन्द्रित करनी चाहिए। रंभा को भोग और श्री शुकदेव जी को मोक्ष का प्रतीक मानना चाहिए।

रचना पारंपरिक रूप से ज्ञात है परन्तु इसके रचयिता अज्ञात हैं. कोई कोई इसे संत दादू दयाल के शिष्य संत रज्जब के भी शिष्य 'खेम (षेम?) दास' (१६८०-१७४०) की बतलाते हैं पर इसका कोई आधार और औचित्य नहीं क्योंकि उस परम्परा में कोई संत संस्कृत और श्रृंगारिक तत्व के रचनाकार प्रतीत नहीं होते. प्रस्तुति में अपेक्षित संशोधनादि हेतु सुझावों का स्वागत है.

दीपावली संवत २०८०

तदनुसार 12 Nov. 2023

डा० सुरेन्द्र वर्मा

skverma07@gmail.com

रम्भा शुक संवाद

रम्भा: मार्गे मार्गे नूतनं चूतखण्डं, खण्डे खण्डे कोकिलानां विरावः ।
रावे रावे मानिनी मानभंगो भंगे भंगे मन्मथः पञ्चबाणः ॥1

हे मुनि ! मार्ग मार्ग में नयी मंजरियाँ शोभायमान हैं, मंजरी मंजरी पर कोयल की मधुर कुहक हैं । कुहक सुनकर मानिनी स्त्रियों का गर्व दूर होता है, और गर्व नष्ट होते ही पाँच बाणों को धारण करने वाले कामदेव अपने आक्रमण से मन को मथ डालते हैं ।

शुक: मार्गे मार्गे जायते साधुसङ्गः सङ्गे सङ्गे श्रूयते कृष्णकीर्तिः ।
कीर्तौ कीर्तौ नस्तदाकारवृत्तिः वृत्तौ वृत्तौ सच्चिदानन्द भासः ॥2

हे रंभा ! हर मार्ग में साधु जनों का संग होता है, हर सत्संग में भगवान कृष्ण चंद्र के गुणगान सुनने को मिलते हैं । हर गुणगान सुनते समय हमारी चित्तवृत्ति भगवान के ध्यान में लीन होती है, और हर समय सच्चिदानंद की अनुभूति होती है ।

तीर्थे तीर्थे निर्मलं ब्रह्मवृन्दं वृन्दे वृन्दे तत्त्व चिन्तानुवादः ।
वादे वादे जायते तत्त्व बोधो बोधे बोधे भासते चन्द्रचूडः ॥3

हर तीर्थ में पवित्र ब्राह्मणों का समुदाय विराजमान है । ब्रह्म समुदाय में तत्त्व का विचार हुआ करता है । उन विचारों में तत्त्व का ज्ञान होता है, और उस ज्ञान में भगवान चंद्रशेखर शिवजी का भास होता है ।

रम्भा: गेहे गेहे जङ्गमा हेमवल्ली वल्यां वल्यां पार्वणं चन्द्रबिम्बम् ।
बिम्बे बिम्बे दृश्यते मीन युग्मं युग्मे युग्मे पञ्चबाणप्रचारः ॥4

हे मुनिवर ! हर घर में घूमती फिरती सोने की लता जैसी ललनाओं के मुख पूर्णिमा के चंद्र जैसे सुंदर हैं । उन मुखचंद्रो में नयन रुप दो मछलीयाँ दिख रही है, और उन मीनरुप नयनों में कामदेव स्वतंत्र घूम रहा है ।

शुक: स्थाने स्थाने दृश्यते रत्नवेदी वेद्यां वेद्यां सिद्ध गन्धर्वगोष्ठी ।
गोष्ठयां गोष्ठयां किन्नर द्वन्द्वगीतं गीते गीते गीयते रामचन्द्रः ॥5

हे रंभा ! हर स्थान में रत्न की वेदी दिख रही है, हर वेदी पर सिद्ध और गंधर्वों की सभा होती है । उन सभाओं में किन्नर गण किन्नरीयों के साथ गाना गा रहे हैं । हर गाने में भगवान रामचंद्र की कीर्ति गायी जा रही है ।

रम्भा: पीनस्तनी चन्दनचर्चिताङ्गी विलोलनेत्रा तरुणी सुशीला

नाऽऽलिङ्गिता प्रेमभरेण येन वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥6

हे मुनिवर ! सुंदर स्तनवाली, शरीर पर चंदन का लेप की हुई, चंचल आँखोंवाली सुंदर युवती का प्रेम से जिस पुरुष ने आलिंगन किया नहीं, उसका जन्म व्यर्थ गया

शुक: अचिन्त्य रूपो भगवान्निरञ्जनो विश्वम्भरो ज्ञानमयश्चिदात्मा ।

विशोधितो येन हृदि क्षणं नो वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥7

जिसके रुप का चिंतन नहीं हो सकता, जो निरंजन, विश्व का पालक है, जो ज्ञान से परिपूर्ण है, ऐसे चित्स्वरुप परब्रह्म का ध्यान जिसने स्वयं के हृदय में किया नहीं है, उसका जन्म व्यर्थ गया।

रम्भा: कामातुरा पूर्णशशांक वक्त्रा बिम्बाधरा कोमलनाल गौरा ।

नाऽऽलिङ्गिता स्वे हृदये भुजाभ्यां वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥8

हे मुनि ! भोग की ईच्छा से व्याकुल, परिपूर्ण चंद्र जैसे मुखवाली, बिंबाधरा, कोमल कमल के नाल जैसी, गौर वर्णी कामिनी जिसने छाती से नहीं लगायी, उसका जीवन व्यर्थ गया ।

शुक: चतुर्भुजः चक्रधरो गदायुधः पीताम्बरः कौस्तुभमालया लसन् ।

ध्याने धृतो येन न बोधकाले वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥9

हे रंभा ! चक्र और गदा जिसने हाथ में लिये हैं, ऐसे चार हाथवाले, पीतांबर पहेने हुए, कौस्तुभमणि की माला से विभूषित भगवान का ध्यान, जिसने जाग्रत अवस्था में किया नहीं, उसका जन्म व्यर्थ गया ।

रम्भा: विचित्रवेषा नवयौवनाढ्या लवङ्ग कर्पूर सुवासिदेहा ।

नाऽऽलिङ्गिता येन दृढं भुजाभ्यां वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥10

हे मुनिराज ! अनेक प्रकार के वस्त्र और आभूषणों से सज्ज, लवंग कर्पूर इत्यादि सुगंध से सुवासित शरीरवाली नवयुवती को, जिसने अपने दो हाथों से आलिंगन दिया नहीं, उसका जन्म व्यर्थ गया ।

शुक: नारायणः पङ्कजलोचनः प्रभुः केयूरवान् कुण्डल मण्डिताननः ।

भक्त्या स्तुतो येन न शुद्धचेतसा वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥11

कमल जैसे नेत्रवाले, केयूर पर सवार, कुंडल से सुशोभित मुखवाले, संसार के स्वामी भगवान नारायण की स्तुति जिसने एकाग्रचित्त होकर, भक्तिपूर्वक की नहीं, उसका जीवन व्यर्थ गया ।

रम्भा: प्रियंवदा चम्पक हेमवर्णा हारावली मण्डित नाभिदेशा।
सम्भोगशीला रमिता न येन वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥12

हे मुनिवर! प्रिय बोलनेवाली, चंपक और सुवर्ण के रंगवाली, हार का झुमका नाभि पर लटक रहा हो ऐसी, स्वभाव से रमणशील स्त्री से जिसने भोग विलास नहीं किया, उसका जीवन व्यर्थ गया।

शुक: श्रीवत्सलक्षाङ्किकतह्रत्प्रदेशः तार्क्ष्यध्वजः शाङ्र्गधरः परात्मा।
न सेवितो येन नृजन्मनाऽपि वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥13

जिस प्राणी ने मनुष्य शरीर पाकर भी, भृगुलता से विभूषित ह्रदय वाले, ध्वजा में गरुड वाले, और शाङ्र्ग धनुष को धारण करनेवाले परमात्मा की सेवा न की, उसका जन्म व्यर्थ गया।

रम्भा: चलत्कटी नूपुरमञ्जुघोषा नासाग्रमुक्ता नयनाभिरामा।
न सेविता येन भुजङ्ग वेणी वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥14

हे मुनिश्रेष्ठ! चंचल कमर वाली, नूपुर से मधुर शब्द करने वाली, नाक में मोती पहनी हुई, सुंदर नयनों से सुशोभित, सर्प के जैसा जूडा जिसने धारण किया है, ऐसी सुंदरी का जिसने सेवन नहीं किया, उसका जन्म व्यर्थ गया।

शुक: विश्वम्भरो ज्ञानमयः परेशः जगन्मयोऽनन्तगुण प्रकाशी।
आराधितो नापि वृतो न योगे वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥15

हे रंभा! संसार का पालन करने वाले, ज्ञान से परिपूर्ण, संसार स्वरूप, अनंत गुणों को प्रकट करने वाले भगवान की आराधना जिसने नहीं की, और योग में उनका ध्यान जिसने नहीं किया, उसका जन्म व्यर्थ गया।

रम्भा: ताम्बूलरागैः कुसुम प्रकर्षैः सुगन्धितैलेन च वासितायाः।
न मर्दितौ येन कुचौ निशायां वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥16

हे मुनि! सुगंधी पान, उत्तम फूल, सुगंधी तेल, और अन्य पदार्थों से सुवासित कायावाली कामिनी के कुच का मर्दन रात को जिसने नहीं किया उसका जीवन व्यर्थ गया।

शुक: ब्रह्मादि देवोऽखिल विश्वदेवो मोक्षप्रदोऽतीतगुणः प्रशान्तः।
धृतो न योगेन हृदि स्वकीये वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥17

ब्रह्मादि देवों के भी देव, संपूर्ण संसार के स्वामी, मोक्षदाता, निर्गुण, अत्यंत शांत ऐसे भगबान का ध्यान जिसने योग द्वारा हृदय में नहीं किया उसका जीवन व्यर्थ गया।

रम्भा: कस्तूरिका कुंकुम चन्दनैश्च सुचर्चिता याऽगुरु धूपिकाम्बरा ।
उरः स्थले नो लुठिता निशायां वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥18

कस्तूरी और केसर से युक्त चंदन का लेप जिसने किया है, अगर के गंध से सुवासित वस्त्र धारण की हुई तरुणी रात को जिस पुरुष की छाती पर लेटी नहीं, उस पुरुष का जन्म व्यर्थ गया ।

शुक: आनन्द रूपो निजबोध रूपः दिव्यस्वरूपो बहुनाम रूप: ।
तपः समाधौ मिलितो न येन वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥19

हे रंभा ! आनंद से परिपूर्ण रुप वाले, दिव्य शरीर को धारण करने वाले, जिनके अनेक नाम और रुप हैं ऐसे भगवान के दर्शन जिसने समाधि में नहीं किए, उसका जीवन व्यर्थ गया ।

रम्भा:कठोर पीनस्तन भारनम्रा सुमध्यमा चञ्चल खञ्जनाक्षी ।
हेमन्तकाले रमिता न येन वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥20

जिस पुरुष ने हेमंत ऋतु में, कठोर और भरे हुए स्तन के भार से झुकी हुई, पतली कमरवाली, चंचल और खंजन से नैनोंवाली स्त्री का संभोग नहीं किया, उसका जीवन व्यर्थ गया ।

शुक: तपोमयो ज्ञानमयो विजन्मा विद्यामयो योगमयः परात्मा ।
चित्ते धृतो नो तपसि स्थितेन वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥21

हे रंभा ! तपोमय, ज्ञानमय, जन्म रहित, विद्यामय, योगमय परमात्मा को तपस्या में लीन होकर जिसने चित्त में धारण नहीं किया, उसका जीवन व्यर्थ गया ।

रम्भा:सुलक्षणा मानवती गुणाढ्या प्रसन्नवक्त्रा मृदुभाषिणी या ।
नो चुम्बिता येन सुनाभिदेशे वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥22

हे मुनिवर ! सद्लक्षणों और गुणों से युक्त, प्रसन्न मुख वाली, मधुर बोलने वाली, मानिनी सुंदरी की नाभि का जिसने चुंबन नहीं किया उसका जीवन व्यर्थ गया ।

शुक: पल्यार्जितं सर्व सुखं विनश्वरं दुःखप्रदं कामिनि भोगसेवितम् ।
एवं विदित्वा न धृतो हि योगो वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥23

हे रंभा ! जिस मनुष्य ने, नारी के सेवन से उत्पन्न सब सुख नाशवंत, और दुःखदायक है ऐसा जान कर भी, योगाभ्यास नहीं किया, उसका जीवन व्यर्थ गया ।

रम्भा: विशालवेणी नयनाभिरामा कन्दर्प सम्पूर्ण निधानरूपा ।
भुक्ता न येनैव वसन्तकाले वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥24

जिस पुरुष ने वसंत ऋतु में लंबी चोटी वाली, मोहक नेत्रों युक्त, कामदेव के समग्र भंडार रूप कामिनी के साथ विहार न किया हो, उसका जीवन व्यर्थ गया ।

शुक: मायाकरण्डी नरकस्य हण्डी तपो विखण्डी सुकृतस्य भण्डी ।
नृणां विखण्डी चिरसेविता चेत् वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥25

हे रंभा ! नारी माया की पिटारी, नर्क की हंडी, तपस्या का विनाश करनेवाली, पुण्य का नाश करनेवाली और पुरुष को नष्ट करने वाली है; जिस पुरुष ने अधिक समय तक उसका सेवन किया है, उसका जीवन व्यर्थ गया।

रम्भा: समस्तश्रृङ्गार विनोदशीला लीलावती कोकिल कण्ठमाला ।
विलासिता नो नवयौवनेन वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥26

हे मुनि ! जिस पुरुष ने अपनी युवानी में, समस्त श्रृंगार और विनोद करने में चतुर, अनेक लीलाओं में कुशल और कोकिलकण्ठी कामिनी के साथ विलास नहीं किया, उसका जीवन व्यर्थ है ।

शुक: समाधि हंत्री जनमोहयित्री धर्मे कुमन्त्री कपटस्य तन्त्री ।
सत्कर्म हन्त्री कलिता च येन वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥27

समाधि का नाश करने वाली, लोगों को मोहित करने वाली, धर्म विनाशिनी, कपट की वीणा, सत्कर्मो का नाश करने वाली नारी का जिसने सेवन किया, उसका जीवन व्यर्थ गया ।

रम्भा: बिल्वस्तनी कोमलिता सुशीला सुगन्धयुक्ता ललिता च गौरी ।
नाऽऽश्लेषिता येन च कण्ठदेशे वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥28

हे मुनिराज ! जिसके **बिल्व फल** जैसे कठोर स्तन हैं, अत्यंत कोमल जिसका शरीर है, प्रिय स्वभाव है, ऐसी सुवासित केश वाली, लुभाने वाली गौर युवती को जिसने आलिंगन नहीं दिया, उसका जीवन व्यर्थ गया ।

शुक: चिन्ता व्यथा दुःखमया सदोषा संसारपाशा जन मोहकर्त्री ।
सन्तापकोशा भजिता च येन वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥29

चिंता, पीडा, और अनेक प्रकार के दुःख से परिपूर्ण, दोष से भरी हुई, संसार में बंधन रुप और संताप का खजाना, ऐसी नारी का जिसने सेवन किया उसका जन्म व्यर्थ गया ।

रम्भा: आनन्द कन्दर्प निधानरूपा झणत्क्वणत्कंकण नूपुराढ्या ।

नाऽस्वादिता येन सुधाधरस्था वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥30

हे मुनिवर और कामदेव के खजाने समान आनंद !, खनकते कंगन और नूपुर पहने हुई कामिनी की अधर सुधा का जिसने पान किया नहीं, उस पुरुष का जीवन व्यर्थ है ।

शुक: कापट्यवेषा जनवञ्चिका सा विण्मूत्र दुर्गन्धदरी दुराशा ।

संसेविता येन सदा मलाढ्या वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥31

छल-कपट करने वाली, लोगों को ठगने वाली, विष्टा-मूत्र और दुर्गंध की गुफारूप, दुराशाओं से परिपूर्ण, अनेक प्रकार के मल से भरी हुई स्त्री का सेवन जिसने किया, उसका जीवन व्यर्थ है ।

रम्भा: चन्द्रानना सुन्दर गौरवर्णा व्यक्तस्तनी भोगविलास दक्षा ।

नाऽऽन्दोलिता वै शयनेषु येन वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥32

हे मुनिवर ! चंद्र जैसे मुखवाली, सुंदर और गौर वर्णवाली, उभरे स्तन वाली संभोग और विलास में चतुर स्त्री को शैय्या में जिसने आलिंगन नहीं दिया, उसका जीवन व्यर्थ है ।

शुक: उन्मत्तवेषा मदिरासु मत्ता पापप्रदा लोकविडम्बनीया ।

योगच्छला येन विभाजिता च   वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥33

हे रंभा ! पागल जैसा विचित्र वेष धारण की हुई, मदिरा पीकर उन्मत्त हुई, पाप देने वाली, लोगों को बनाने वाली, और योगियों के साथ कपट करने वाली स्त्री का सेवन जिसने किया है, उसका जीवन व्यर्थ है ।

रम्भा: आनन्दरूपा तरुणी नताङ्गी सद्धर्मसंसाधन सृष्टिरुपा ।

कामार्थदा यस्य गृहे न नारी   वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥34

हे मुनि ! आनंदरुप, नतांगी युवती, उत्तम धर्म के पालन में और सन्तान उत्पन्न करने में सहायक, इंद्रियों को संतोष देनेवाली नारी जिस पुरुष के घर में न हो, उसका जीवन व्यर्थ है ।

शुक: अशौचदेहा पतित स्वभावा वपु:प्रगल्भा बललोभशीला ।

मृषा वदन्ती कलिता च येन वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥35

अशुद्ध शरीर वाली, पतित स्वभाव वाली, प्रगल्भ देह वाली, साहस और लोभ कराने वाली, झूठ बोलने वाली, ऐसी नारी का विश्वास जिसने किया, उसका जीवन व्यर्थ है ।

रम्भा: क्षामोदरी हंसगतिः प्रमत्ता सौंदर्य सौभाग्यवती प्रलोला ।
न पीडिता येन रतौ यथेच्छं वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥36

हे मुनिवर ! पतली कमर वाली, हंस की तरह चलने वाली, प्रमत्त सुंदर, सौभाग्यवती, चंचल स्वभाव वाली स्त्री को जिसने रति क्रीडा के समय यथेच्छया पीडित नहीं किया, उसका जीवन व्यर्थ है ।

शुक: संसारसद्भावन भक्तिहीना चित्तस्य चौरा हृदि निर्दया च ।
विहाय योगं कलिता च येन वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥37

हे रंभा ! संसार की उत्तम भावनाओं को प्रकट करनेवाले प्रेम से रहित पुरुषों के चित्त को चोरनेवाली, हृदय में दया न रखनेवाली, ऐसी स्त्री का आलिंगन, योगाभ्यास छोडकर जिस पुरुष ने किया, उसका जीवन व्यर्थ है ।

रम्भा: सुगन्धैः सुपुष्पैः सुशय्या सुकान्ता वसन्तो ऋतुः पूर्णिमा पूर्णचन्द्रः ।
यदा नास्ति पुंस्त्वं नरस्य प्रभूतं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥38

हे मुनिवर ! सुंदर, सुगंधित पुष्पों से सुशोभित शय्या हो, मनोनुकूल सुंदर स्त्री हो, वसंत ऋतु हो, पूर्णिमा के चंद्र की चांदनी खिली हो, पर यदि पुरुष में परिपूर्ण पुरुषत्त्व न हो तो उसका जीवन व्यर्थ है ।

शुक: [1]सुरूपं शरीरं नवीनं कलत्रं धनं मेरुतुल्यं वचश्चारुचित्रम् ।
हरस्यांघ्रीयुग्मे मनश्चेदलग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥39

हे रंभा ! सुंदर शरीर हो तो क्या, युवा पत्नी हो तो क्या, मेरु पर्वत समान धन हो तो क्या,मन को लुभानेवाली मधुर वाणी हो तो क्या, पर यदि भगवान शिवजी के चरणकमल में मन न लगे, तो जीवन व्यर्थ है ।

[1] यह श्लोक शंकराचार्य विरचित गुरु अष्टकं के इस श्लोक से मिलता जुलता है:
शरीरं सुरुपं तथा वा कलत्रं, यशश्चारू चित्रं धनं मेरुतुल्यम् ।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरंघ्रिपद्मे, ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥1॥